डॉ. अम्बेडकर के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचार

डॉ. अमरजीत कुमार

डॉ॰ अम्बेडकर मूलतः एक विधिवेत्ता थे और कानून की महत्ता पर उसका अटल विश्वास था। इस आस्था के आधार पर, वे एक लोकतंत्रवादी ही हो सकते थे और संवैधानिक ढ़ाँचे के माध्यम से वे लोकतंत्र को सही दिशा में अग्रसर करना चाहते थे। उनका मत था कि लोकतांत्रिक व्यवस्था का सही संचालन, केवल समानता के आधार पर ही हो सकता है। भारत जैसे देश में जहाँ दलितों को ''अछूत'' की संज्ञा दी जाती है, लोकतंत्र निरर्थक हो जाता है। इसलिए उन्होंने महसूस किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले ही कुछ समस्याओं का, समुचित निदान कर लिया जाये ताकि बाद में समाज के सामने विघटनकारी प्रवृत्तियाँ सिर न उठायें। इस सम्बन्ध में भी उनकी पहली चिन्ता थी अछूतों को अधिकार दिलाना। इस आधार पर उन्होंनें दलितों के लिए पृथक प्रतिनिधित्व की बात सामने रखी। उन्होंने अंग्रेजी शासन से बारंबार जोर देकर यह कहा कि उसने दलितों की स्थिति सुधारने के लिए कभी कोई कदम नहीं उठाया। इस बात का भरसक प्रयत्न कर रहे थे कि उनको वरीयता के आधार पर कुछ विशेष अधिकार प्रदान किये जायें ताकि उनकी सत्ता को राजनैतिक हथकंडों का शिकार न होना पड़े।